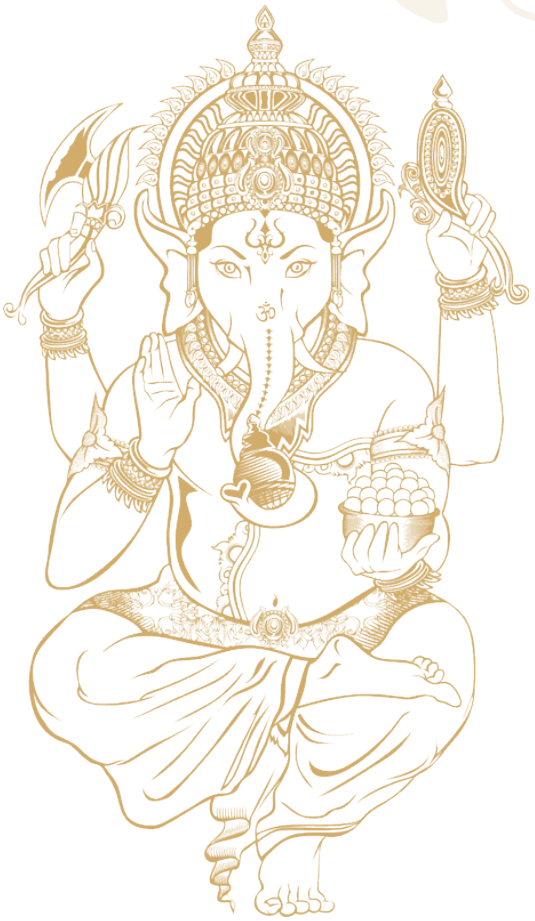

Girl

24 Mar 2026

09:22 AM

Pune

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121774701**

तिथि 24/03/2026 **समय** 09:22:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Pune **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:30
अक्षांश 18:34:00 उत्तर **रेखांश** 73:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	20:54:26 घं
वेलान्तर	00:06:18 घं
सूर्योदय	06:35:24 घं
सूर्यास्त	18:45:48 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	6
नक्षत्र	रोहिणी
योग	आयुष्मान
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वी-वीणा
पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
होरा	शुक्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

चन्द्र 4वर्ष 4मा 7दि
चन्द्र
24/03/2026
31/07/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	24/03/2026
शनि	31/05/2026
बुध	31/10/2027
केतु	31/05/2028
शुक्र	30/01/2030
सूर्य	31/07/2030

योगिनी

सिद्धा 3वर्ष 0मा 17दि
सिद्धा
24/03/2026
10/04/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	24/03/2026
धान्या	11/05/2026
भ्रामरी	19/02/2027
भद्रिका	09/02/2028
उल्का	10/04/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:12:02	मेष	कृतिका	1	सूर्य	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			09:17:45	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	मित्र राशि	1.58	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			17:31:40	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण	1.20	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	22:44:59	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	शनि	सम राशि	1.52	अमात्य	भ्रातृ	क्षेम
बुध			14:47:40	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	सम राशि	1.21	पुत्र	ज्ञाति	विपत
गुरु			21:08:09	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.17	भ्रातृ	धन	क्षेम
शुक्र			27:44:46	मीन	रेवती	4	बुध	गुरु	उच्च राशि	1.37	आत्मा	कलत्र	साधक
शनि		अ	10:20:41	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	सूर्य	सम राशि	0.84	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		14:30:54	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		14:30:54	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

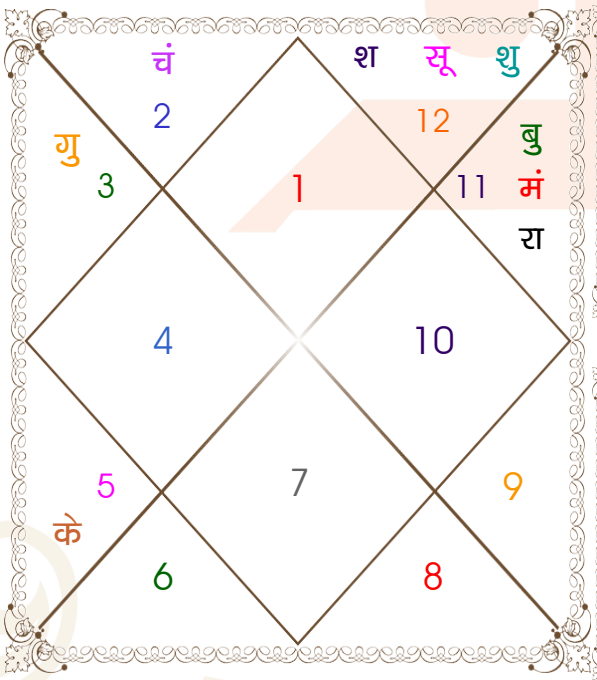

चन्द्र कुंडली

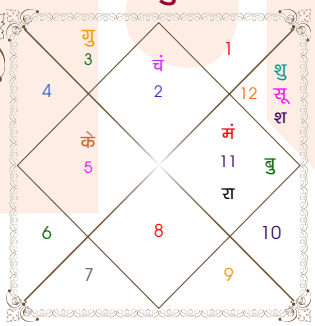

नवमांश कुंडली

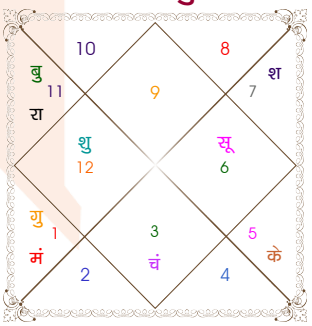

सर्वाष्टकवर्ग

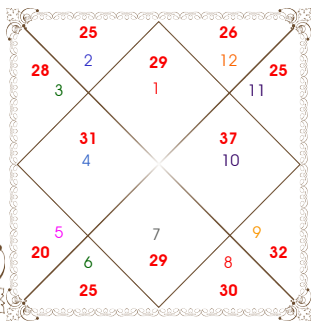

दशमांश कुंडली

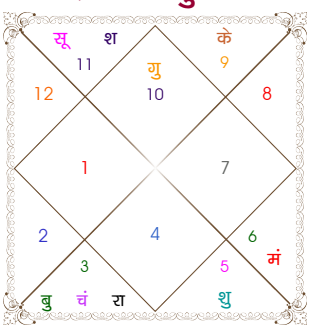

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

नक्षत्रफल

आप रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी सर्प योनि, मूषक वर्ग, मनुष्य गण, अन्त्य नाड़ी तथा वैश्य वर्ण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका नाम "वि" या "वी" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा विद्या, वीना आदि।

आप भगवान की सत्ता में प्रारम्भ से ही विश्वास करने वाली आस्तिक महिला होंगी। धर्म कर्म की आप ज्ञाता होंगी। तथा शास्त्रीय नियमानुसार इनको सम्पन्न करेंगी। आपका स्वभाव अच्छा तथा रूप दर्शनीय होगा। बोलने में आप अत्यन्त ही चतुराई का प्रदर्शन करेंगी। किसी भी बात का तत्काल सार्थक उत्तर देने में आप अति प्रवीण होंगी। आपकी बुद्धि तीव्र होगी तथा कठिन विषय को सरलता से स्पष्ट करके समझाने की कला में दक्ष होंगी।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

आप आजीवन धन से युक्त होकर जीवन के समस्त सुखों का उपभोग करेंगी। कृतज्ञता के सद्गुण से आप सुशोभित होंगी। यदि कोई व्यक्ति आपके लिए कोई थोड़ा सा भी कार्य करता है तो आप दिल से उसका आभार प्रकट करेंगी। मंत्रियों या उच्चाधिकारियों से आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी। जिसे सुनकर अन्य लोग भी आनन्दित होंगे। आप हमेशा सत्य बोलेंगी तथा आजीवन यत्नपूर्वक सत्य का पालन करेंगी।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

आपका शरीर सामान्य रूप से स्वस्थ ही रहेगा तथा रोगों का अभाव रहेगा। उत्साह से आप सम्पूर्ण होगी तथा जो भी कार्य करेंगी सोत्साह से उसे पूर्ण करेंगी। इस उत्साही प्रवृति से आप जीवन में बहुत उन्नति करेंगी।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप हमेशा शारीरिक तथा आत्मिक शुद्धि के प्रति सजग रहेंगी। आपके विचार से शारीरिक शुद्धता के समान आत्मिक शुद्धता भी अत्यन्तावश्यक है। इसके लिए आप आजीवन यत्नशील रहेंगी। आप स्थिर बुद्धि की स्वामिनी होंगी। अतः जो भी कार्य करेंगी चंचलता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक एवं एकाग्रता के साथ सम्पन्न करेंगी।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

सामान्य रूप से आपका शरीर स्वस्थ ही रहेगा। अन्य जनों के दोषों के बारे में आप शीघ्र ही जानने वाली होंगी तथा ज्ञान प्राप्ति में आपकी रुचि रहेगी।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

आप वृष राशि में पैदा हुई हैं। अतः आपका वर्ण लालिमा युक्त गौरवर्ण तथा गाल स्थूल होंगे। आँखे आपकी बड़ी बड़ी तथा मोटी होंगी। आपकी प्रकृति थोड़ी बहुत आलसी भी होगी। आप श्रेष्ठ कुलोत्पन्न अर्थात् उत्तम कुल में जन्म लेने वाले लोगों के प्रति असीम श्रद्धा

तथा सेवा का भाव मन में रखेंगी तथा उसके प्रर्दशन हेतु भी तत्पर रहेंगी। गुरु तथा ब्राहमण की आप भक्त होंगी। इनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना परमपुनीत कर्तव्य समझेंगी। आप कफ तथा वात से युक्त मिश्रित प्रकृति की होंगी। आपका जीवन प्रायः सुखी जीवन रहेगा तथा बुद्धिमता का अभाव नहीं रहेगा। आपके बाल घुँघराले होंगे तथा दान शीलता के भाव से भी आप सुशोभित रहेंगी।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

जीवन में आप समस्त सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगी तथा दान देने की प्रवृति भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगी। धनार्जन आपके पास प्रचुर मात्रा में रहेगा। अतः आपकी प्रवृति विलासी होगी। समस्त भौतिक उपकरणों एवं सुख साधनों पर आप अन्मुक्त भाव से व्यय करेंगी। तेजस्विता भी आप में परिलक्षित होगी। आपके मित्र अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त होंगे तथा मित्रता आपकी स्थिर रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका चेहरा तथा जानुभाग दीर्घ होगा। आप जीवन के अन्तिम दो भागों को सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी। परन्तु प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण ढंग से व्यतीत होंगे। आप त्याग की भावना से भी परिपूर्ण रहेंगी तथा अवसरानुकूल इस भावना का परिचय देंगी। आप दण्ड देने की बजाय क्षमा करना अधिक उचित समझेंगी। क्षमाशीलता के इस गुण से आपके प्रति लोगों का सम्मान बढ़ेगा। प्रारम्भिक अवस्था में आपको कष्ट सहने पड़ेंगे तथा परिश्रम भी अधिक करना पडेगा। आपकी पीठ, चेहरे या बगल में तिल, मस्सा या व्रणादि का निशान हो सकता हैं।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

सन्तति संख्या में आपकी कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी। आपका व्यवहार एवं आचरण उत्तम रहेगा। सभी आपको प्रशंसा की दृष्टि से देखेंगे। धन एवं ऐश्वर्य का उपभोग करती हुई आपका यश दूर दूर तक व्याप्त होगा।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत होगा तथा आपके ऊपर कामभावना का प्रभाव भी अधिक मात्रा में रहेगा। कीर्ति आपकी चारों तरफ फैलेगी। अच्छे बुरे की पहचान करने में आप सक्षम होंगी तथा आपकी चलने की गति अत्यन्त ही मोहक होगी। शरीर के अंग आपके दीर्घ एवं स्थूल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप शनैः शनैः चलना पसन्द करेंगी तथा कार्य सम्पन्न करने में आप चतुर होगी। परोपकार की भावना से भी आप पूर्ण रूप से युक्त रहेंगी। तथा समयानुसार इसका पालन भी करेंगी। इस प्रकार आप अपने द्वारा किए गये सत्कार्यों तथा पुण्यों से जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आप देखने में अत्यन्त ही दर्शनीय होंगी तथा मुख आकृति थोड़ी बड़ी होगी। आप सविलास गमन प्रिय होंगी तथा कष्टों को सहने में आप पूर्ण रूप से सक्षम रहेंगी। आप एक अधिकार सम्पन्न महिला हो सकती हैं। पेट में आपकी जठराग्नि की प्रबलता रहेगी। इसके साथ ही आप युवा तथा वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगी। साथ ही आप अच्छे स्वभाव वाली तथा शिव एवं विष्णु भगवान की पूजा करने वाली होंगी।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप धार्मिक एवं श्रद्धालु प्रवृति की महिला होंगी। ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति आपकी असीम श्रद्धा एवं सेवा भाव रहेगा। यदा कदा आप अभिमान के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। बल का आपमें अभाव नहीं रहेगा तथा दया एवं करूणा की भावना से आप परिपूर्ण रहेंगी। इसी परिपेक्ष्य में आप दीन दुःखियों की यथा सम्भव सेवा तथा सहायता करेंगी। आप कई प्रकार के कार्यों अथवा कलाओं के जानने में दक्ष होंगी। ज्ञान को आप पूर्ण रूप से प्राप्त करके ज्ञानी कहलाएंगी। आपका शरीर सदैव कान्तियुक्त होगा एवं आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करने वाली होंगी।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।

धन तथा मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगी। निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त कुशल होंगी। आपका वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाली होगी अर्थात् आप किसी नगर या समूह की सम्माननीय महिला हो सकती हैं। आपकी आँखों का आकार भी सामान्य से दीर्घ होगा अर्थात् आँखे बड़ी बड़ी होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आपका जन्म सर्प योनि में हुआ है। अतः आपमें कभी कभी क्रोध की मात्रा अत्यधिक दृष्टिगोचर होगी। प्रकृति आपकी चंचल होगी। जिहवा से भी आप चंचलता का प्रदर्शन करेंगे अर्थात् खट्टी, मीठी, तीखी इन वस्तुओं का सेवन करने में आपकी विशेष रूचि रहेगी। संक्षेप में आप चटोरी प्रवृति की होंगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्याध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी

सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

आपके लिए मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनिकरण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि का चन्द्रमा अनिष्ट फल प्रदान करने वाले हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य, हस्त नक्षत्र सुकर्मा योग एवं शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, लेन देन, क्रय विक्रय, नवगृह निर्माण आदि कार्य न करें अन्यथा हानि के योग बनेंगे। साथ ही शनिवार चतुर्थ प्रहर एवं धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों से वर्जित रखें। ऐसे समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

जब आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो, शारीरिक तथा मानसिक व्याकुलता हो रही हो, व्यापार में हानि,नौकरी या प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से सन्तोषी माता के व्रत रखने चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फलों की कमी होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप किसी योग्य विद्वान से कराने पर भी मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शिव या विष्णु की भी पूजा अर्चना कर सकती हैं।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com